साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार 12-18 जून 2023 वर्ष-9, अंक-9

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

-सरकार ने खरीफ फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य बढ़ाया

किसानों की बल्ले-बल्ले

मूंग दाल के एमएसपी में 10.4 फीसदी का इजाफा किया गया

» जवार, बाजरा, रागी, अरहर दाल उड़द दाल में 7 फीसदी वृद्धि

» धान का एमएसपी अब 2183 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया

नई दिल्ली/भोपाल। जागत गांव हमार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में किसानों को राहत देते हुए खरीफ फसलों न्यूनतम समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी की है। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कैबिनेट बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी देते हुए बताया कि मूंग दाल के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर सबसे अधिक 10.4 फीसदी, मूंगफली पर 9 फीसदी, सेसमम पर 10.3 फीसदी, धान पर 7 फीसदी, जवार, बाजरा, रागी, मेज, अरहर दाल, उड़द दाल, सोयाबीन, सूरजमुखी बीज पर वित्त वर्ष 2023-2024 के लिए लगभग 6-7 फीसदी की वृद्धि की गई है।

तुअर दाल में 400 की बढ़ोतरी

केंद्रीय कैबिनेट ने मक्का और दालों की मिनिमम सपोर्ट प्राइस में बढ़ोतरी को भी मंजूरी दी है। तुअर दाल की एमएसपी को 400 रुपए प्रति क्विंटल और उड़द दाल की एमएसपी को 350 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ाने को मंजूरी दे दी है। तुअर दाल की एमएसपी बढ़कर 7,000 रुपए प्रति क्विंटल और उड़द दाल की एमएसपी 6,950 रुपए प्रति क्विंटल हो गई है। मक्का की एमएसपी 128 रुपए प्रति क्विंटल और धान की एमएसपी 143 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ाई गई है।

फसल	एमएसपी रुपए में
धान	143
ज्वार	210
बाजरा	150
रागी	268
मक्का	128
तुअर	400
मूंग	803
उड़द	350
मूंगफली	527
सूरजमुखी	360
सोयाबीन	300
तिल	803
रामतिल	447
कपास	640

बीते 9 वर्षों में किसान भाई-बहनों के हित में कई अहम फैसले लिए गए हैं। इसी कड़ी में सरकार ने खरीफ फसलों के लिए एमएसपी में बढ़ोतरी को मंजूरी दी है। इससे अन्नदाताओं को उपज का लाभकारी मूल्य मिलने के साथ ही फसलों में विविधता लाने के प्रयासों को भी बल मिलेगा।

नरेंद्र मोदी, पीएम

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केंद्रीय कैबिनेट ने खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 के लिए एमएसपी में वृद्धि को स्वीकृति प्रदान कर किसानों के कल्याण के लिए एक और अभूतपूर्व प्रयास किया है। इससे किसानों को उनकी उपज का बेहतर मूल्य मिलेगा और जीवन भी अधिक सुगम होगा।

शिवराज सिंह चौहान, सीएम

पहले न्यूनतम समर्थन मूल्य का निर्णय सरकार की मर्जी पर निर्भर करता था और यूपीए सरकार में 5-10 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ाकर सरकार अपनी वाहवाही कराती थी। नरेंद्र मोदी पहले ऐसे प्रधानमंत्री है जिन्होंने किसान की फसल पर आने वाली लागत में 50 फीसदी मुनाफा जोड़कर एमएसपी तय करने का फैसला किया।

नरेंद्र सिंह तोमर, केंद्रीय कृषि मंत्री

मक्का की एमएसपी 128 रुपए प्रति क्विंटल और धान की एमएसपी 143 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ाई गई है। सूरजमुखी बीज पर वित्त वर्ष 2023-2024 के लिए लगभग 6-7 फीसदी की वृद्धि की गई है। खरीफ फसलों के समर्थन मूल्यों में रिकॉर्ड वृद्धि के लिए प्रधानमंत्री का मप्र के सभी किसानों की ओर से हृदय से आभार।

-कमल पटेल, कृषि मंत्री, मप्र

-सरकार ने किए इंतजाम:

किसानों को 267 में यूरिया और 1350 रुपए में मिलेगी डीएपी

» प्रदेश में पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध

» डिफाल्टर किसानों का ब्याज माफ, सोसायटी से मिलेगी खाद

भोपाल। किसान-कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री कमल पटेल ने कहा है कि प्रदेश में पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध है। किसानों को खाद के लिये परेशान नहीं होने दिया जाएगा। पर्याप्त मात्रा में यूरिया मिलेगा। डिफाल्टर किसानों का ब्याज सरकार ने माफ कर दिया है। अब उन्हें भी सोसायटी से खाद मिल सकेगी। कृषि मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने राहत प्रदान करते हुए साढ़े 11 लाख डिफाल्टर किसानों का 2129 करोड़ रुपए का ऋण ब्याज माफ कर दिया है। अब किसानों को सोसायटियों से ऋण पर खाद मिल सकेगी। उन्होंने बताया कि किसानों को 267 रुपए में यूरिया और 1350 रुपए में डीएपी खाद मिलेगी।

बीमा कंपनियों के अधिकारियों के साथ नियमित बैठकें भी हो रही

मध्य प्रदेश में 44 लाख किसानों को मिलेगा 2021 का फसल बीमा

भोपाल। जागत गांव हमार

प्रदेश के 44 लाख किसानों को 13 जून को सरकार वर्ष 2021 का 2,933 करोड़ रुपए का प्रधानमंत्री फसल बीमा राशि देगी। साथ ही, विधानसभा चुनाव से पहले सितंबर-अक्टूबर में एक बार फिर बीमा की राशि किसानों के खाते में जमा की जाएगी। वर्ष 2022 में भी खरीफ और रबी फसल को वर्षा से क्षति पहुंची थी, उसकी बीमा राशि दिलाने की प्रक्रिया कृषि विभाग ने प्रारंभ कर दी है। प्रयास यह है कि दावों को सितंबर तक अंतिम रूप दे दिया जाए ताकि विधानसभा चुनाव की आचार संहिता लागू होने के पहले कार्यक्रम करके राशि किसानों के खातों में अंतरित कर दी जाए।

कृषि विभाग के अधिकारियों का कहना है कि वर्ष 2022 में खरीफ और रबी फसलों को अतिवृष्टि या ओलावृष्टि से जो क्षति हुई, उसका आकलन करके बीमा कंपनियों को दावे पेश किए जा चुके हैं। प्रयास यही है कि दो-तीन माह में परीक्षण की प्रक्रिया पूरी हो जाए ताकि सितंबर-अक्टूबर में एक बार फिर किसानों के खातों में बीमा की राशि जमा करवा दी जाए। बीमा कंपनियों के अधिकारियों के साथ नियमित बैठकें भी हो रही हैं ताकि परेशानी दूर कर दावों को अंतिम रूप दिया जा सके।

जिले	किसान	राशि
रतलाम	2,22,868	123 करोड़
सागर	1,25,883	99 करोड़ 61 लाख
मंदसौर	1,61, 751	53 करोड़
खंडवा	1,06,862	92 करोड़
छिंदवाड़ा	1,03,167	58 करोड़ 17 लाख
जबलपुर	29,141	20 करोड़ 26 लाख
ग्वालियर	23,021	15 करोड़ 95 लाख
भोपाल	67,038	53 करोड़ 27 लाख

जिलों में हुई थी सर्वाधिक क्षति

वर्ष 2021 के फसल बीमा में सर्वाधिक 271 करोड़ रुपए उज्जैन जिले के 5,36,315 किसानों को मिलेंगे। इसके बाद सीहोर जिले के 4,05,150 किसानों को 232 करोड़, शाजापुर जिले के 1,94,000 किसानों को 197 करोड़, विदिशा जिले के 2,70, 850 किसानों को 196 करोड़ , नर्मदापुरम के 1,47,178 किसानों को 190 करोड़ और राजगढ़ जिले के 1,97,200 किसानों को 169 करोड़ फसल बीमा के मिलेंगे। इन्हीं जिलों में फसलों की क्षति अधिक हुई थी।

सरकार ने दिए था 18 करोड़

अक्टूबर में विधानसभा चुनाव की आचार संहिता लागू हो जाएगी। इसे ध्यान में रखते हुए तैयारियां की जा रही हैं। एक हजार रुपए से कम नहीं मिलेगी बीमा राशि सरकार ने फसल बीमा योजना के अंतर्गत यह प्रावधान कर दिया है कि किसानों का एक हजार रुपए से कम की बीमा राशि नहीं दी जाएगी। यदि किसान का दावा इस राशि से कम बनता है तो अंतर की राशि सरकार अपने स्तर से मिलाकर देगी। पिछले साल भी 18 करोड़ रुपए सरकार ने अपनी ओर से किसानों को दिए थे।

प्राकृतिक खेती के द्वारा ही मृदा को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है

टीकमगढ़। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. बी.एस. किरार, वैज्ञानिक डॉ. आर.के. प्रजापति, डॉ. एस.के. सिंह, डॉ. यू.एस. धाकड़, डॉ. आई.डी. सिंह एवं जयपाल छिगारहा ने दिनांक 06-06-2023 को प्राकृतिक खेती के द्वारा मृदा को प्रदूषित होने से बचाये जाने के विषय पर किसानों को प्रशिक्षण दिया। मृदा प्रदूषण कृषि क्षेत्र के लिए एक ज्वलंत समस्या बनती जा रही है। मृदा की उर्वरा शक्ति को केवल रासायनिक उर्वरक द्वारा काफी समय तक सुरक्षित नहीं रखा जा सकता है। जीवित व सक्रिय मृदा वही कहलाती है जिसमें की जीवांश की मात्रा अधिक से अधिक हो। इनकी अधिकता से भूमि की उर्वरा शक्ति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जिससे न केवल टिकाऊ फसल उत्पादन में मदद मिलेगी बल्कि मृदा के स्वास्थ्य को भी लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

आवश्यकतानुसार संतुलित उर्वरक प्रयोग करें

मृदा में होने वाले प्रदूषण के निराकरण हेतु किसानों को चाहिए कि वे फसल की आवश्यकतानुसार संतुलित उर्वरक प्रयोग करें। जिससे खेती की लागत पर भी खर्चा कम होगा, भरपूर उत्पादन प्राप्त होगा और मुख्य लाभ मृदा प्रदूषित होने से बच जाएगी। स्वस्थ मृदा में जीवांश पदार्थ की मात्रा अधिक से अधिक होना चाहिए इसलिए किसान भाई अपने खेतों में अधिक से अधिक कार्बनिक खादें जैसे - गोबर की खाद, हरी खाद, जीवाणु खाद, आदि का प्रयोग करें। जिससे मृदा के भौतिक एवं रासायनिक गुणों को लंबे समय तक फसलोत्पादन के लिए सुरक्षित रखा जा सके। इस प्रकार रासायनिक उर्वरकों एवं दवाओं के प्रयोग से बढ़ते जहरीले प्रभाव का कम किया जा सकता है।

विषैली दवाओं के प्रयोग करने से फसलों के मित्र कीट खत्म होते जा रहे हैं

किसान फसलों को कीड़े-बीमारियों से बचाने के लिए बहुत अधिक मात्रा में विभिन्न प्रकार की रासायनिक दवायें डालता है, जिससे भूमि, हवा, जल दूषित होता जा रहा है साथ ही फसलों का उत्पादन भी दूषित हो रहा है। इन विषैली दवाओं के अधिकता से प्रयोग करने से किसान / फसलों के मित्र कीट भी खत्म होते जा रहे हैं। इन सब के समाधान के लिए किसानों को जैविक उर्वरक और जैविक फफूंदनाशक व कीटनाशकों का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करना चाहिए और धीरे-धीरे प्राकृतिक खेती की तरफ बढ़ना चाहिए जिससे मृदा के स्वास्थ्य के साथ मनुष्य का स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा इस प्रकार किसान अपने परिवार को भयानक एवं खतरनाक बीमारियों से बचा सकेगा। प्राकृतिक खेती / जैविक खेती से होने वाली पैदावार की अलग से पैकिंग एवं ब्रांडिंग कर बिक्री हेतु एक निश्चित स्थान बनायें जिससे उनकी अच्छी कीमत मिल सके।

किसान जागरूक होंगे तभी होगी पर्यावरण की रक्षाः मानवेंद्र सिंह

किसान पृथ्वी और प्रकृति को बचाने में सहयोग कर सकता हैः एसपी सिंह

लहार(भिंड)। जागत गांव हमार

पर्यावरण के लिए जीवन शैली कार्यक्रम के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र पर विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को कृषि में पर्यावरण की उपयोगिता एवं उसके महत्व पर विस्तार से जानकारी प्रदान की गई। इस अवसर पर किसानों को अमरूद के एक-एक पौधे एवं सब्जी सीट किट प्रदान की गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ एस पी सिंह ने कहा कि कृषि में पर्यावरण की उपयोगिता बहुत मायने रखती है। किसान पर्यावरण का हितेषी बनकर पृथ्वी और प्रकृति को बचाने में सहयोग कर सकता है। इसके लिए किसान को प्राकृतिक और जैविक कृषि को अपनाते हुए कीटनाशकों का कम से कम प्रयोग के साथ ही पॉलीथिन का प्रयोग पूरी तरह रोकना होगा। पर्यावरण की रक्षा से जल, जंगल, जमीन, जलवायु, जनसंख्या सुरक्षित रखने में सहायता मिल पाएगी मिल सकेगी।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जनपद पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि मानवेंद्र सिंह ने कहा कि किसान ही पर्यावरण प्रदूषण के लिए जिम्मेदार है। किसान खेतों में पराली जलाता है। किसान छोटी-छोटी बीमारियों के लिए कीटनाशकों का प्रयोग करता है। पर्यावरण की दिशा में भी किसान बहुत ज्यादा रुचि नहीं रखता है। यदि किसान जागरूक हो जाएं जो किसान पर्यावरण का सबसे बड़ा हित रक्षक बन सकता है। इसलिए किसानों को पर्यावरण की रक्षा के लिए आगे आना होगा। यदि किसान ऐसा करते हैं तो पर्यावरण संरक्षण में वह महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

इंसान प्रकृति पर निर्भर है न कि प्रकृति इंसान पर

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अवधेश सिंह ने बताया कि इंसान प्रकृति पर निर्भर है न कि प्रकृति इंसान पर निर्भर है। यदि प्रकृति बचेगी तो पृथ्वी और पर्यावरण की भी रक्षा हो सकेगी। केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ करणवीर सिंह द्वारा अधिक से अधिक वृक्षारोपण खासकर फल वृक्ष लगाने का आग्रह किसानों से किया गया। वैज्ञानिक डॉ एन एस भदौरिया ने बताया कि पर्यावरण सुरक्षा से ही जीवन की रक्षा हो सकती है। अटारी, जबलपुर से पधारे डॉ. रंजीत सिंह ने कहा कि किसानों को खेती किसानी के साथ पर्यावरण सुरक्षा की भी शपथ लेनी चाहिए। कार्यक्रम मैं केंद्र के डॉ रुपेंद्र कुमार एवं डॉ भानु प्रताप सिंह रघुवंशी द्वारा भी किसानों को पर्यावरण संबंधी जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि मानवेंद्र सिंह एवं केंद्र प्रमुख द्वारा किसानों को अमरुद के पौधे एवं सब्जी किट का वितरण भी किया गया। इसके साथ ही केंद्र पर भी वृक्षारोपण किया गया।

कार्यक्रम में ये रहे उपस्थित

कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ एस पी सिंह एवं संचालन डॉ अवधेश सिंह द्वारा किया गया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रुप से दीपेंद्र शर्मा, विनोद दुबे गिरवासा, सुरेश कुमार जगनपुरा, रामशरण नगायच मोहनपुरा, सरनाम सिंह दबोह, बृजेंद्र सिंह चूरली, लल्लन सुंदरपुरा, अमरीश शर्मा, भारत सिंह वैशपुरा, दीपक शर्मा, मुन्ना पटेल, मनोज शुक्ला, रन सिंह, गंगाराम, शुगम कुशवाहा आदि किसान प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण कार्यक्रम एवं कृषक संगोष्ठी आयोजित

नरसिंहपुर।

कृषि विज्ञान केन्द्र नरसिंहपुर में वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ विशाल मेश्राम के मार्गदर्शन में दिनांक 05 जून 2023 को कृषि विज्ञान केन्द्र नरसिंहपुर में मिशन लाइफ के अंतर्गत वृक्षारोपण कार्यक्रम एवं कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया । डॉ मेश्राम ने संगोष्ठी में उपस्थित कृषकों एवं देशी पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों को जानकारी देते हुये बताया कि पर्यारवण के संरक्षण हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ ने पहल करते हुये सर्वप्रथम 5 जून 1973 को विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन किया तभी से सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण दिवस मनाया जा रहा है। प्रत्येक वर्ष इसकी एक निश्चित थीम होती है जैसे इस वर्ष 2023 की थीम '' बीट द प्लास्टिक पालुशन है जिसका अर्थ है कि प्लास्टिक द्वारा होने वाले प्रदूषण को हराना। उक्त कार्यक्रम के तहत कृषि वानिकी एवं फलदार पौधों का रोपण कृषि विज्ञान केन्द्र प्रांगण में वृहद वृक्षारोपण के आगाज से प्रारंभ किया गया। कृषि वानिकी पौधों में पीपल, नीम एवं यूके लिपटिस आदि तथा फलदार पौधों में अमरूद, नीबू एवं करोदा आदि का पौधों को रोपण किया गया। केन्द्र के कृषि वानिकी वैज्ञानिक डॉ. आशुतोष शर्मा ने बताया कि खेती के साथ साथ परती भूमि पर, कृषि फार्म या खेतों की मेडो पर नत्रजन स्थिरीकरण करने वाले वृक्षों को अवश्य लगाए जैसे किन्ही, बबूल ग्लिरीसीडिया इत्यादि पौधे लगा सकते हैं।

सग्रकिसग्रसिग्रारिस ग्रारस्रिागरसिग्रारस्रि

इन पौधों से नत्रजन हरीखाद एवं मृदा क्षरण रोकने के अतिरिक्त अन्य बहुत से उत्पाद प्राप्त हो सके तथा तेज हवाओं से फसल को होने वाले नुकसान को बचाया जा सकें, डॉ. एस. आर. शर्मा ने बताया कि कृषक फलदार वृक्षों का रोपण करके अपनी आय में वृद्धि कर सकतें है क्योकि एक बार फलदार वृक्ष लगाने से उनमें बिना लागत के आय अर्जित की जा सकती है। आज के बदलती जलवायु परिवर्तन के लिए मनुष्यों द्वारा लगातार वृक्षों का हनन किया जाना है। जिससे प्रकृति में बदलते मौसम को रोकने के लिए वृक्षारोपण अति आवश्यक है। उपसंचालक कृषि डॉ रामनाथ पटैल द्वारा सुझाव दिया गया कि खरीफ मौसम में फलदार वृक्षारोपण का कार्यक्रम वृहद स्तर पर किए जाने हेतु कार्य योजना बनाने की बात कही, उपपरियोजना संचालक आत्मा श्रीमति शिल्पी नेमा ने सुझाव दिया कि महिलाओं एवं किशोरी बलिकाओं को पोषण हेतु पोषण वाटिका का महत्व साथ ही कुपोषण हेतु सहजन (मुनगा) का महत्व समझाया। पोषकीय अनाज जैसें राई, कोदो, कुटकी आदि के उत्पादन एवं पोषण संबंधी जानकारी दी। कार्यक्रम में केन्द्र के डॉ. विजय सिंह सूर्यवंशी तकनीकी सहायक, कु. रिंकी झारिया के साथ ही 39 कृषकों की सराहनीय उपस्थिति रही।

अधिक से अधिक पेड़ लगाना है, पर्यावरण को बचाना है

रीवा। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केंद्र रीवा म प्र द्वारा आज विश्व पर्यावरण दिवस के शुभ अवसर पर रायपुर कर्चुलियान ब्लॉक के ग्राम रामनई एवम मऊगंज के भाटी ग्राम में बृक्षा रोपड़ कर ग्राम वासियों को संदेश दिया गया कि अधिक से अधिक पेड़ लगाकर पर्यावरण को बचाना है। इस अवसर पर केंद्र के प्रभारी ए के पटेल ने कृषकों एवम आमजनों को संदेश दिया कि पर्यावरण एवम मृदा को सुरक्षित रखना है तो ज्यादा से ज्यादा हम लोगों को पेड़ लगाना होगा जिससे जलवायु में हो रहे परिवर्तन को भी संतुलित कर सकते है। उद्यान वैज्ञानिक डा राजेश सिंह ने कहा कि हमे फलदार वृक्ष अधिक से अधिक लगाना चाहिए जिससे पर्यावरण की सुरक्षा के साथ साथ फलों का उपयोग भी किया जा सके। इस अवसर पर गांवों के प्रगतशील किसान उपस्थित रहे।

हर साल सरकारी तरीके से हो रही नीलामी

देशभर में प्रसिद्ध राजगढ़ के कोठी बाग का लंगड़ा आम

राजगढ़। जागत गांव हमार

गर्मी का मौसम हो और फलों के राजा आम की बात न हो ऐसा कैसे हो सकता है। गर्मियां आते ही बाजारों में आम की सैंकड़ो दुकानें सजी नजर आती हैं। आम की कई किस्में हैं, जो अपने- अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध हैं, जहां बनारसी लंगड़ा आम का अपने आप में एक अलग मुकाम है, तो वहीं प्रसिद्धि में राजगढ़ की रियासत काल के कोठीबाग का आम भी कम लाजवाब नहीं है। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से लगभग 140 किलोमीटर की दूरी पर बसे राजगढ़ जिला मुख्यालय में छोटे पुल के पास स्थित रियासतकाल के कोठीबाग का लंगड़ा आम देशभर में प्रसिद्ध है। जिसकी साल भर देखभाल कृषि विभाग की निगरानी में की जाती है और सीजन में सरकारी पद्धति से पेड़ों को नीलाम किया जाता है।

पड़ोसी राज्यों में भी डिमांड

पीढ़ियों से कोठीबाग का ठेका लेते आ रहे असलम राईन बताते है कि कोठीबाग का लंगड़ा आम सिर्फ राजगढ़ में ही नहीं, बल्कि दिल्ली, राजस्थान और उत्तरप्रदेश तक प्रसिद्ध है। यहां के आम की खासियत है कि यह 80 प्रतिशत पेड़ में ही पक जाता है और इसे 20 प्रतिशत पकाने के लिए प्राकृतिक घास व पेड़ों की पत्तियों का इस्तेमाल किया जाता है। दो से तीन दिन तक प्राकृतिक तरीके से पकाने के बाद लंगड़े आम की मांग के आधार पर पार्सल के माध्यम से इसे दिल्ली, राजस्थान व उत्तरप्रदेश तक पहुंचाया जाता है। लोकल में भी इसकी अधिक डिमांड है, जिसके लिए वे राजगढ़ के मुख्य बाजार में हाथ ठेले के माध्यम से कोठीबाग के आम का विक्रय करते हैं।

हमारे क्षेत्र में बहुत से फलों के पेड़ लगे हुए है, लेकिन आम के जो वृक्ष हैं वो काफी अच्छे फल देते हैं और प्रसिद्ध भी हैं। इसका फल देश के अन्य भागों में भी भेजा जाता है। कोठीबाग में 60 से 62 आम के वृक्ष हैं, जिनमें इस वर्ष पूरी तरह से फलन हुआ है। इसकी नीलामी खुली बोली के माध्यम से की जाती है।

भगवान सिंह गुमरावत, राजगढ़ कृषि विज्ञान केंद्र में मृदा वैज्ञानिक व कोठीबाग क्षेत्र प्रभारी

मप्र में विधानसभा चुनाव से राज्य सरकार खोलेगी खजाना

आहत किसानों को राहत

ब्याज माफी के तहत 22 सौ करोड़ किसानों को मिलेंगे

-किसान कल्याण के एक हजार 400 करोड़ खातों में डालेंगे

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव के पहले शिवराज सरकार किसानों को बड़ी राहत देने जा रही है। 13 जून को राजगढ़ में किसान कल्याण महाकुंभ होगा। इसमें विभिन्न योजनाओं के माध्यम से किसानों के खातों में छह हजार 500 करोड़ रुपए अंतरित किए जाएंगे। 44 लाख 49 हजार 649 किसानों को दो हजार 933 करोड़ का फसल बीमा दिलाया जाएगा तो 11 लाख 20 हजार किसानों को दो हजार 200 करोड़ की ब्याज माफी मिलेगी। मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के एक हजार 400 करोड़ रुपये सिंगल क्लिक के माध्यम से खातों में जमा होंगे। महाकुंभ की तैयारियों को लेकर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक कर चुके हैं। महाकुंभ रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और मुख्यमंत्री की उपस्थिति में होगा। कृषि और सहकारिता विभाग के अधिकारियों ने बताया कि वर्ष 2021 में प्राकृतिक आपदा से प्रभावित खरीफ और रबी फसलों का बीमा एक साथ किसानों को दिया जाएगा। बीमा कंपनियों ने 44 लाख 49 हजार 649 किसानों के दो हजार 933 करोड़ के दावे मंजूर किए हैं। यह राशि किसानों के खातों में 13 जून को अंतरित की जाएगी।

दस हजार मिल रही सम्मान निधि

प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों के 11 लाख 20 हजार अपात्र किसानों को दो हजार 200 करोड़ रुपए की ब्याज माफी देकर पात्र बनाया जाएगा। इसके बाद उन्हें समितियों से खाद-बीज मिलना प्रारंभ हो जाएगा। इसके साथ ही मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना अंतर्गत एक हजार 400 करोड़ किसानों के खातों में जमा कराए जाएंगे। शिवराज सरकार ने प्रतिवर्ष दो किस्त में किसान को चार हजार रुपए देने की योजना प्रारंभ की थी। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि में पात्र किसानों को छह हजार रुपए तीन किस्तों में दिए जा रहे हैं। बैठक में बताया गया कि जल जीवन मिशन की गोरखपुरा परियोजना के 156 ग्रामों में जल-प्रदाय योजना का शुभारंभ, जिले के 40 करोड़ रुपए लागत के कार्यों का ई-लोकार्पण और भूमि-पूजन भी किया जाएगा। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री आवासीय भू-अधिकार योजना के लाभार्थियों को अधिकार-पत्र का वितरण होगा। इसमें राजगढ़ सहित गुना, भोपाल, रायसेन, विदिशा, सीहोर, उज्जैन, देवास, शाजापुर और आगर-मालवा के किसान शामिल होंगे। इसके अलावा अन्य जिलों के किसान वर्चुअली महाकुंभ से जुड़ेंगे।

किसानों को लाने की व्यवस्था करेंगी सहकारी समितियां

सहकारिता विभाग ने सभी जिला सहकारी केंद्रीय बैंकों को निर्देश दिए हैं कि किसान कल्याण महाकुंभ में किसानों को लाने की व्यवस्था वे और सहकारी समितियां स्वयं के व्यय पर करेंगी। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के लाभार्थियों के लिए व्यवस्था कृषि विभाग करेगा। जिस वाहन से उन्हें लाया जाएगा, उस पर योजना का बैनर लगाया जाएगा प्रतिभागियों के आवागमन, भोजन और सुरक्षा से जुड़ी सभी व्यवस्थाओं के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किए जाएंगे।

मोहनपुरा-कुंडालिया पाइप सिंचाई प्रणाली का होगा लोकार्पण

महाकुंभ में मोहनपुरा-कुंडालिया प्रेशराइड पाइप सिंचाई प्रणाली का लोकार्पण भी किया जाएगा। बांध से एक लाख 50 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई होगी। खुली नहर की तुलना में भूमिगत पाइप लाइन के माध्यम से राजगढ़ और आगर जिले में अधिक क्षेत्र में सिंचाई हो सकेगी। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2018 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बांध का लोकार्पण और भूमिगत नहर कार्यों का भूमिपूजन किया था।

बीज लेकर आओ और सीडबॉल ले जाओ

साल पहले 4 लोगों से शुरू हुई मुहिम से 2000 वॉलंटियर जुड़े

भोपाल। भोपाल के कंफर्ट इनक्लेव में रहने वाले चार लोगों की अनूठी पहल प्रदेश के साथ अब देशभर में प्रचलित हो रही है। तीन साल पहले 500 सीडबॉल से मुहिम शुरू हुई थी। अब तक ये लोग 4 लाख सीडबॉल बांट चुके हैं। देशभर में सीडबॉल बनाने का नि:शुल्क प्रशिक्षण देने की शुरुआत करने वाली इस अवनि वेलफेयर सोसायटी से अब तक 2 हजार लोग वॉलंटियर के रूप में जुड़ चुके हैं। कुछ दिनों पहले दिल्ली विवि ने सीडबॉल बनाने का प्रशिक्षण देने के लिए इन्हें बुलाया था। जहां पर इन्होंने 5 हजार सीडबॉल तैयार किए थे। अब अन्य संस्थाएं भी इन्हें प्रशिक्षण के लिए बुलाती हैं। इनकी अब नई मुहिम है, बीज लेकर आओ और सीडबॉल ले जाओ।

प्रकृति हमें मिल रहे बीज

पेशे से चार्टर अकाउंटेंट रही रूपा चंद्रखेरन और उनके पति जीसी चंद्रशेखरन ने बताया कि प्रकृति हमें बीज देती है, हम उसे उचित वातावरण देते हैं। वे पहले पौधे खरीदकर पौधरोपण करते थे, लेकिन वो पौधे जीवित नहीं रह पाते थे। कॉलोनी के विजय गुप्ता, शिव कुमार पाठक और आरएन पटेल के साथ उन्होंने सीडबॉल बनाने की शुरुआत की थी।

हर मौसम को सहने की क्षमता

विजय गुप्ता बताते है कि सीडबॉल से तैयार होने वाले पौधे हर मौसम में सर्वाइव करते हैं। सीडबॉल वातावरण में आर्द्रता मिलते ही जर्मीनेट होना शुरू हो जाते हैं। इनकी जड़ें अपने हिसाब से मौसम के थपेड़े झेलकर जीवित रहकर पौधे को पनपने में मदद करती हैं। प्रकृति का नियम है कि बीज कहीं भी गिरे प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया के बाद अंकुरित होता ही है।

नदी-नालों में बर्बाद होने वाला पानी अब खेतों में जा रहा

सिंचाई में प्रथम मप! नहरें पक्की कर खेतों तक पाइप पहुंचाए

भोपाल। जागत गांव हमार

अपने कुल क्षेत्रफल की 50 फीसदी जमीन पर खेती करने वाले मप्र के नाम दो उपलब्धियां जुड़ गई हैं। पहली- हम पानी बचाकर और बेहतर ढंग से उपयोग कर सिंचाई क्षमता बढ़ाने में देश में पहले स्थान पर पहुंच गए हैं। सिर्फ तवा परियोजना की नहरों को पक्की बनाकर बर्बाद होने वाला 85000 करोड़ लीटर पानी बचाकर किसानों को दिया गया। इससे किसानों ने 89 हजार हेक्टेयर में तीसरी फसल लगाकर 1,300 करोड़ की कमाई की। दूसरी- देश में 20 हेक्टेयर के खेत तक पाइप से पानी पहुंचता है, जबकि मप्र इकलौता राज्य है जिसने एक हेक्टेक्यर के खेत की मेड़ तक पाइप से पानी पहुंचा दिया है। इससे 40 से 50 फीसदी तक पानी की बचत हो रही है और किसान सीधे नहर के पाइप से स्प्रिंकलर का पाइप जोड़कर फसल को पानी दे रहे हैं।

नहरों पर निर्भर 50 फीसदी किसान

मप्र में 75.45 फीसदी ऐसे किसान हैं, जिनके पास 1- 2 हेक्टेयर कृषि भूमि है। इनमें 50 फीसदी नहरों से सिंचाई करते हैं। इनकी मेड़ तक पानी पहुंच गया है। भौगोलिक क्षेत्रफल 307.56 लाख हेक्टेयर में से 151.91 लाख हेक्टे. पर कृषि होती है। कुल सिंचित क्षेत्रफल 111 लाख हेक्टेयर है।

तवा डैम - 85000 करोड़ लीटर पानी बचा

जल संसाधन विभाग के अनुसार पिछले तीन साल में जो भी परियोजनाएं बनीं, उनमें पाइप वाली नहर का कॉन्सेप्ट अपनाया। तवा जैसी कच्ची नहरों को पक्की किया। इससे डैमों का 9,500 लाख करोड़ लीटर और तवा डैम का 85000 करोड़ लीटर बचाया। तवा डैम की कुल क्षमता 1944 एमसीएम है। इसका 850 एमसीएम (40 फीसदी) पानी बर्बाद हो जाता था।

पाइप प्रणाली - नदी, नाले में वेस्ट पानी बचा

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार खुली नहरों से 40-50 फीसदी पानी बर्बाद हो जाता है। मप्र ने 5 साल में 4.57 लाख हेक्टेयर सूखे खेतों तक पाइप सिंचाई प्रणाली से पानी पहुंचाया। खुली नहर के बजाय पाइप डालने से नदी, नाले और वाष्प के रूप में उड़ जाने वाला पानी बच जाता है। किसानों को भी नहर से खेत तक पानी लाने के लिए मशक्कत नहीं करनी पड़ती है।

प्रदूषण से निपटने का सबसे किफायती और सबसे टिकाऊ तरीका पौधे लगाना

हवा से कैंसर पैदा करने वाले 97 प्रतिशत पदार्थों को दूर कर सकते हैं

शोधकर्ताओं ने पाया कि एंबियस या मॉल, बड़ी जगहों की छोटी हरी दीवार, जिसमें इनडोर पौधों का मिश्रण होता है, हानिकारक, कैंसर पैदा करने वाले प्रदूषकों को हटाने में अत्यधिक प्रभावी पाए गए। इन पौधों ने केवल आठ घंटों में आसपास की हवा से 97 प्रतिशत सबसे जहरीले यौगिकों को हटा दिया था।

एक नए अध्ययन से पता चला है कि पौधे इमारतों के अंदर या इनडोर हवा से बेंजीन जैसे कैंसर पैदा करने वाले यौगिकों सहित जहरीले गैसोलीन धुएं को प्रभावी तरीके से हटा सकते हैं। इस अध्ययन की अगुवाई प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय सिडनी (यूटीएस) के बायोरेमेडिएशन शोधकर्ता एसोसिएट प्रोफेसर फ्रेजर टॉर्पी ने की है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, घर के अंदर की खराब वायु गुणवत्ता दुनिया भर में 67 लाख असमय मृत्यु के लिए जिम्मेदार है। ज्यादातर लोग अपना 90 फीसदी समय घर, स्कूल या कार्यस्थल के अंदर बिताते हैं, इसलिए हवा की गुणवत्ता में सुधार के लिए नई रणनीति अपनाना महत्वपूर्ण है।

शोधकर्ता ने कहा कि, हवा को साफ करने में इनडोर पौधों और हरी दीवारों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका में नए साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं। ये पौधे हम जितनी तेजी से सांस लेते हैं उतनी ही तेजी के साथ हवा को साफ करते हैं। शोधकर्ता ने कहा, हम जानते हैं कि घर के अंदर की हवा की गुणवत्ता अक्सर बाहरी हवा की तुलना में काफी अधिक प्रदूषित होती है, जो बदले में मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती है। लेकिन अच्छी खबर यह है कि इस अध्ययन से पता चला है कि घर के अंदर पौधे लगाने जैसी सरल चीज एक बड़ा सुधार ला सकती है।

इनडोर पौधों पर किए गए पिछले अध्ययनों से पता चला है कि वे इनडोर वायु प्रदूषकों की एक बड़ी मात्रा को हटा सकते हैं, हालांकि यह पौधों की गैसोलीन वाष्प को साफ करने की क्षमता का पहला अध्ययन है, जो दुनिया भर में इमारतों में जहरीले यौगिकों के सबसे बड़े स्रोतों में से एक है। कार्यालय और आवासीय अपार्टमेंट इमारतें अक्सर सीधे पार्किंग गैरेज से जुड़ती हैं, या तो दरवाजे या लिफ्ट शाफ्ट से, जिससे हानिकारक गैसोलीन से संबंधित यौगिकों के काम और आवासीय क्षेत्रों में रिसने से बचना मुश्किल हो जाता है। कई इमारतें आस-पास की सड़कों और राजमार्गों से गैसोलीन के धुएं के संपर्क में भी आती हैं।

गैसोलीन के धुएं में सांस लेने से फेफड़ों में जलन, सिरदर्द और मतली हो सकती है और लंबे समय तक जोखिम से कैंसर, अस्थमा और अन्य पुरानी बीमारियों के

बढ़ते खतरों से जुड़ा हुआ है, जिससे जीवन प्रत्याशा कम हो जाती है। प्रोफेसर टॉर्पी ने कहा कि एक सीलबंद कमरे की माप के आधार पर अध्ययन के परिणाम हवा से गैसोलीन प्रदूषकों को हटाने की उनकी अपेक्षाओं से कहीं अधिक तेज पाए गए। यह पहली बार है जब पौधों को गैसोलीन से संबंधित यौगिकों को हटाने की उनकी क्षमता के लिए परीक्षण किया गया है और इसके परिणाम आश्चर्यजनक हैं।

पौधे न केवल हवा से अधिकांश प्रदूषकों को घंटों में हटा सकते हैं, वे हवा से सबसे हानिकारक गैसोलीन से संबंधित प्रदूषकों को सबसे कुशलता से हटाते हैं, उदाहरण के लिए, कार्सिनोजेन बेंजीन कम हानिकारक पदार्थों की तुलना में तेज गति से पचता है। प्रोफेसर टॉर्पी ने कहा, हमने यह भी पाया कि हवा में विषाक्त पदार्थों की जितनी अधिक मात्रा होती है, विषाक्त पदार्थों को हटाने में पौधे उतने ही तेज और अधिक प्रभावी हो जाते हैं, जिससे पता चलता है कि पौधे उन परिस्थितियों के अनुकूल होते हैं, जिनमें वे बढ़ रहे हैं। शोधकर्ता ने कहा कि शोध के निष्कर्षों ने पूरे देश में सैकड़ों कार्यालय भवनों में पौधों को लगाने की पुष्टि की है।

एंबियस या मॉल, बड़ी जगहों में, हम बार-बार उन हजारों व्यवसायों के लिए स्वास्थ्य, भलाई, उत्पादकता और कार्यालय उपस्थिति में सुधार के लिए पौधों के प्रभावों को देखते हैं जिनके साथ हम काम करते हैं। यह नया शोध साबित करता है कि पौधों को सिर्फ अच्छे हैं के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। बल्कि ये हर कार्यस्थल कल्याण योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। शोधकर्ता ने कहा कि, लब्बोलुआब यह है कि आपके कार्यस्थल और घर में हानिकारक घर के अंदर के वायु प्रदूषकों से निपटने के लिए सबसे अच्छा, सबसे किफायती और सबसे टिकाऊ तरीका पौधों को लगाना है।

मानवता के लिए खतरा, वातावरण में बढ़ता कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर

वातावरण में बढ़ता कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर नित नए रिकॉर्ड बना रहा है, जोकि पूरी मानवता के लिए खतरा है। ऐसा ही कुछ मई 2023 में भी दर्ज किया गया, जब कार्बन डाइऑक्साइड ने पिछले आठ लाख वर्षों का रिकॉर्ड का रिकॉर्ड तोड़ दिया था। इस बारे में नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (एनओएए) की मौना लोआ एटमॉस्फेरिक बेसलाइन ऑब्जर्वेटरी द्वारा जारी आंकड़ों से पता चला है कि मई 2023 में वातावरण में मौजूद कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर 424 भाग प्रति मिलियन (पीपीएम) पर पहुंच गया है। गौरतलब है कि ऐसा पिछले लाखों वर्षों में नहीं देखा गया है। यदि पिछले आंकड़ों को देखें तो वातावरण में मौजूद कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर औद्योगिक काल के शुरूआत की तुलना में अब 50 फीसदी तक बढ़ चुका है।

तोड़ा पिछले आठ लाख वर्षों का रिकॉर्ड

इस बारे में जारी रिपोर्ट के मुताबिक मई 2023 में कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर उत्तरी गोलार्ध में अपने चरम पर पहुंच गया था। वहीं यदि मई 2022 से इसकी तुलना करें तो इसके स्तर में तीन पीपीएम की वृद्धि दर्ज की गई है। देखा जाए तो एनओएए के यह रिकॉर्ड कीलिंग कर्व के शिखर में चौथी सबसे बड़ी वार्षिक वृद्धि का प्रतिनिधित्व करते हैं। वहीं स्क्रिप्स इंस्टिट्यूट के के वैज्ञानिक, जो सीओ2 के स्वतंत्र रिकॉर्ड रखते हैं, उनकी गणना के मुताबिक मई में मासिक औसत स्तर 423.78 पीपीएम रिकॉर्ड किया था, जो उनके मई 2022 के औसत से तीन पीपीएम ज्यादा है। देखा जाए तो यह कोई पहला मौका नहीं है जब कार्बन डाइऑक्साइड के स्तर में इस तरह से वृद्धि हो रही है। इससे पहले भी मई 2021 में महामारी के बावजूद सीओ2 का औसत मासिक स्तर 419.13 पीपीएम पर पहुंच गया था। देखा जाए तो यह कोई पहला मौका नहीं है जब कार्बन डाइऑक्साइड के स्तर में इस तरह से वृद्धि हो रही है। इससे पहले भी मई 2021 के महामारी के बावजूद सीओ2 का औसत मासिक स्तर 419.13 पीपीएम पर पहुंच गया था। वहीं मई 2020 में वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर 417.1 पीपीएम रिकॉर्ड किया गया था। इस बारे में एनओएए की ग्लोबल मॉनिटरिंग लेबोरेटरी से जुड़े एक वरिष्ठ वैज्ञानिक पीटर टैन्स का कहना है कि इंसानों द्वारा उत्सर्जित की जा रही ग्रीनहाउस गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड एक प्रमुख गैस है, जोकि उत्सर्जन के बाद हजारों वर्षों तक वातावरण और महासागरों में बनी रह सकती है। उनके अनुसार हम हर वर्ष वातावरण में करीब 4,000 करोड़ मीट्रिक टन कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ रहे हैं, जो हमारे वातावरण को दूषित कर रहा है।

गौरतलब है कि मौना लोआ मौसम स्टेशन पर ऑन-साइट कार्बन डाइऑक्साइड के अवलोकन का श्रेय 1958 में स्क्रिप्स ओशनोग्राफी के एक भू-वैज्ञानिक चार्ल्स डेविड कीलिंग को जाता हैं, जिन्होंने सबसे पहले इसकी शुरूआत की थी। उन्होंने सबसे पहले नोटिस किया था कि उत्तरी गोलार्ध में पैदावार के सीजन में सीओ2 का स्तर कम हो गया था। वहीं जब पतझड़ में पौधे मर गए तो इसका स्तर दोबारा बढ़ गया था। उन्होंने कार्बन डाइऑक्साइड के स्तर में इस बदलाव को कीलिंग कर्व के रूप में दर्ज किया था।

मानवता के लिए खतरा बन चुका है बढ़ता स्तर- इस बारे में एनओएए के प्रशासक रिक स्पिनराड का कहना है कि, हर साल हम जलवायु में आते बदलावों के कारण बाढ़, सूखा, लू, भीषण गर्मी, दावाग्नि, और हमारे चारों ओर उठ रहे तूफान जैसी चरम मौसमी घटनाओं को देख रहे हैं। हम इन आपदाओं से बच नहीं सकते हमें इनके अनुकूल होने की जरूरत है। इनसे बचने के लिए हमें बढ़ते कार्बन प्रदूषण को कम करने के लिए हर संभव प्रयास करने चाहिए जिससे इस ग्रह और इसे घर कहने वाले जीवन को बचाया जा सके। उनके मुताबिक वनों का होता विनाश, सीमेंट निर्माण, कृषि, परिवहन, विद्युत के लिए जीवाश्म ईंधन का उपयोग वातावरण में बढ़ते कार्बन डाइऑक्साइड प्रदूषण के लिए जिम्मेवार है। कार्बन डाइऑक्साइड अन्य ग्रीनहाउस गैसों की तरह सतह से परिवर्तित होने वाली ऊष्मा को ट्रैप कर लेती है और उसे अंतरिक्ष में जाने से रोक देती है। नतीजन धरती का तापमान बढ़ रहा है उसकी वजह से चरम मौसमी घटनाएं कहीं ज्यादा विकराल रूप ले रहीं हैं और उनकी आवृति भी पहले से ज्यादा बढ़ गई है। इतना ही नहीं वातावरण में बढ़ता कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर समुद्रों के लिए भी खतरा पैदा कर रहा है जो वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड और अतिरिक्त गर्मी को सोख लेते हैं। इसकी वजह से न केवल समुद्र की सतह का तापमान बढ़ रहा है साथ ही उनका पानी में अम्लीकरण बढ़ रहा है। समुद्री जल में मौजूद ऑक्सीजन का स्तर घट रहा है। इसकी वजह से जीवों के विकास पर असर पड़ रहा है। देखा जाए तो इसका खामियाजा समुद्र में रहने वाले किसी एक जीव को नहीं बल्कि पूरे समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को भुगतना पड़ रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी की मिस्र यात्रा बदल सकती है खेती का भविष्य

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस महीने मिस्र जा रहे है। यहां वह मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल सिसि के साथ दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने को लेकर बातचीत करेंगे। इस बार दोनों नेताओं की बैठक में कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा होनी है। उद्योग, आतंकवाद और रक्षा के अलावा जिस एक और महत्वपूर्ण मुद्दे पर दोनों देशों के बीच सहमति बन सकती है, वो है खेती-किसानी। इसके लिए होने वाला समझौता भारत में खेती का भविष्य बदल सकता है। दरअसल मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सिसी इस साल जनवरी में जब गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि बनकर आए थे, तभी दोनों नेताओं के बीच मिस्र-भारत संबंध मजबूत करने पर सहमति बन गई थी। भारत अरब देशों में अपनी दमदार उपस्थिति चाहता है, वहीं स्वेज नहर के आसपास उसका भारी निवेश भी है। इन दोनों ही काम में मिस्र का सहयोग जरूरी है।

24-25 जून को काहिरा जाएंगे पीएम मोदी: इस यात्रा की जानकारी रखने वाले लोगों का कहना है कि पीएम मोदी 24 और 25 जून को मिस्र की राजधानी काहिरा में होंगे। दोनों देशों के बीच आतंकवाद को रोकने के लिए सहयोग बढ़ाने पर चर्चा होगी। वहीं रक्षा उद्योग, सुरक्षा और ऊर्जा सेक्टर के लिए भी बातचीत होगी। वैसे भी दोनों देशों के बीच बीते दो साल में रक्षा क्षेत्र में मजबूती आई है। भारत और मिस्र ने साथ में सैन्य अभ्यास भी किया है।

बदल जाएगा कृषि क्षेत्र का हाल: पीएम मोदी की ये मिस्र यात्रा खेती-किसानी के लिए अहम मानी जा रही है। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद भारत का गेहूं निर्यात बढ़ा है और मिस्र गेहूं के प्रमुख खरीदार देशों में से एक है। ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि मिस्र में भारतीय कृषि जिंसों के निर्यात को बढ़ाने पर दोनों नेताओं के बीच सहमति बन सकती है। इसके अलावा भारत-मिस्र एक कृषि समझौते पर भी हस्ताक्षर कर सकते हैं। इस समझौते में सबसे ज्यादा जोर खेती करने के तौर तरीकों को साझा करने पर रहेगा।दोनों देश कृषि सेक्टर में अपनाई जाने वाली बेस्ट गतिविधियों को शेयर करेंगे। इसका फायदा भारत और मिस्र दोनों को ही मिलेगा। खेती को आधुनिक बनाने में मदद मिलेगी।

नाबार्ड आम महोत्सव में नूरजहां का जलवा

भोपाल। जागत गांव हमार

राजधानी के बिट्टन मार्केट स्थित नाबार्ड परिसर में गुरुवार से आम महोत्सव शुरू हुआ। यहां आम की कई नई वैराइटी भी देखने को मिल रही है। इसमें शहडोल का आम्रपाली और मल्लिका के अलावा रीवा का सुंदरजा आम भी मौजूद है। इसे शुगर फ्री आम भी कहते हैं। इसे डायबिटीज के मरीज भी खा सकते हैं। पहले दिन आम के दीवानों को सात किस्म के आमों का जायका चखने को मिला। आम महोत्सव का आयोजन 12 जून तक चलेगा। आम महोत्सव में आलीराजपुर के काठीवाड़ा से आए रुमाल बघेल ने बताया कि नूरजहां आम का आकार ही इसकी खासियत है। यह आम दुर्लभ प्रजाति का है। पहले पेड़ों की संख्या ज्यादा थी, जो नष्ट हो गए। इस किस्म के नए पेड़ अब तैयार नहीं हो रहे हैं। हालांकि कृषि वैज्ञानिक लगातार प्रयास कर रहे हैं। हालांकि यह आम सिर्फ डिस्प्ले के लिए उपलब्ध हैं।

बिना केमिकल के भूसे में रखकर पकाए गए ये आम

आम महोत्सव में आए किसानों ने बताया कि सामान्य आमों से इसकी कीमत 10 से 20 प्रतिशत ज्यादा है। कारण- इन्हें किसी भी प्रकार के केमिकल से नहीं पकाते। इन्हें पकाने के लिए भूसे के अलावा कागज का इस्तेमाल किया जाता है। वहीं, कई वैराइटी ऐसी भी हैं, जो कि प्राकृतिक तौर पर पेड़ पर ही पकाई जाती हैं। बता दें कि इस मेले में विभिन्न किस्मों जैसे सुंदरजा, केसर, चौंसा, लंगड़ा व दशहरी आम उपलब्ध हैं।

आम महोत्सव में ये खास किस्में

मल्लिका: नीलम और दशहरी का मिला जुला स्वाद

शहडोल के रहने वाले एस चावले आम महोत्सव में छोटा मल्लिका आम लेकर पहुंचे हैं। एस चावले ने बताया कि आमतौर पर भोपाल में यह कम ही मिलता है। इसकी ग्राफ्टिंग नीलम और दशहरी आम को मिलाकर की है। इसमें दोनों का स्वाद होता है। यह एक तरह का खट्टा-मीठा आम है। आमतौर पर यह शहडोल क्षेत्र में ही मिलता है। क्योंकि वहां का वातावरण इस आम के लिए अच्छा है।

आम्रपाली: नीलम और मल्लिका मिला जुला स्वाद

यह अपनी ही तरह का आम है। इसके बारे में चावले ने बताया कि इसकी ग्राफ्टिंग नीलम और मल्लिका को मिलाकर की गई है। आम तौर पर यह आम उत्तरप्रदेश में फेमस है। क्योंकि शहडोल में यूपी से सटे इलाके में इसे लगाया जाता है। इसको खाने में आपको नीलम और मल्लिका का स्वाद एक साथ मिलेगा।

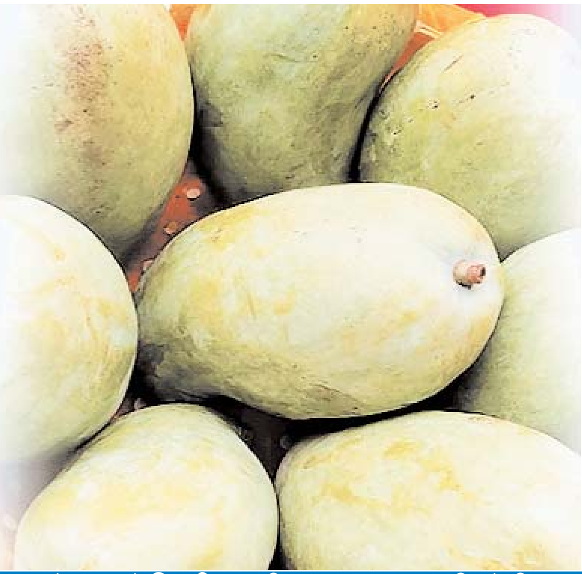

देशभर में सिर्फ एक ही जगह सुंदरजा की खेती

रीवा के गोविंदगढ़ से आए सुरेंद्र यादव इस आम महोत्सव में सुंदरजा आम लाए हैं। इसे जीआइ टैग भी मिल चुका है। इसकी खासियत है कि इसमें शुगर कम मात्रा में होती है। इस कारण इसे डायबिटीज के मरीज भी खा सकते हैं। इसके अलावा, यह गोविंदगढ़ इलाके में ही पाया जाता है। वहां 500 एकड़ में इसे उगाया जाता है। स्टडी में पाया गया है कि यहां का पानी का पीएच लेवल इसे सूट करता है, इसलिए यह सिर्फ इस इलाके में ही होते हैं। हालांकि इसकी ग्राफ्टिंग की जा रही है।

मालदा: गुठली छोटी और पल्प ज्यादा, पूरा मीठा

छिंदवाड़ा के तामिया जिले से आए ब्रज किशोर डेहरिया ने बताया कि वह यहां दशहरी के साथ केसर और मालदा आम लेकर आए हैं। मालदा आम अपने आप में अलग होता है। इसमें गुठली छोटी होती है वहीं, पल्प यानी गूदा दूसरी वैराइटी की तुलना में 20 प्रतिशत तक अधिक होता है। इसके अलावा, यह पूरी तरह से मीठा होता है। वहीं, दशहरी और केसर में भी टेस्ट थोड़ा अलग मिलेगा। क्योंकि इलाकों के अनुसार इनके टेस्ट में भी थोड़ा अंतर होता है।

नेचुरल तरीके से पकाया, देसी, बड़ा दशहरी और चौसा

शिवपुरी से भोपाल मैंगो फेस्टिवल में आए किसान अंतर सिंह जाटव ने बताया कि यहां देसी कच्चा आम, बड़ा दशहरी और चौसा आम लेकर आया हूं। हालांकि यह आम कहीं भी मिल जाएगा। मगर हम इसे नेचुरल तरीके से पकाते हैं न कि केमिकल से। इसे भूसे में दबाकर पकाया जाता है, इसलिए इन आमों में साधारण आम की तुलना में नेचुरल टेस्ट मिलेगा। वहीं इस फेस्टिवल में आए सभी लोगों की नजरें नूरजहां पर थीं। यह कोई बेगम नहीं, बलकि रसीला आम है, जिसका वजन ढाई-तीन किलो तक होता है और कीमत 12 सौ रुपए है। इसे आलीराजपुर के प्रवीण गोयल लाए थे। इसके अलावा आम की मल्लिका, केसर, मालदा, आम्रपाली और लंगड़ा जैसी किस्मों ने भी लोगों को लुभाया।

नूरजहां की होती है एडवांस बुकिंग

आलीराजपुर के प्रवीण कहते हैं कि हमारे पास नूरजहां के तीन पेड़ हैं। तीनों पेड पर 200 से 300 नग आम आते हैं। यहां सिर्फ 10 नग ही लाए हैं। इनकी बुकिंग पहले से की जाती है। हम भी और वेराइटी के आम खाकर अपना मन भर लेते हैं, क्योंकि अगर हम एक आम भी खाएंगे तो हमारा 1200 रुपए का नुकसान हो जाएगा। अगर हमारे बगीचे से कोई व्यक्ति दूसरे आम खरीदता है, तभी हम उसे नूरजहां का एक आम देते हैं। इसे खाखड़ा, लेम और आंकड़ा के पत्तों में दबाकर रखा जाता है। यह दस दिन में पककर तैयार होता है।

खुशबू से बिकता है सुंदरजा आम

महोत्सव में सुंदरजा आम की मांग है। इसकी कीमत 300 रुपए किलो तक है। यह बाहर से

पीला-सिंदूरी रंग का होता है। इसे डायबिटिक पेशेंट भी खा सकते हैं। पहले दिन आठ क्विंटल आम आए। इसकी खुशबू मात्र से ही लोग इसे खरीदने के लिए तैयार हो जाते हैं।

मोबाइल वैन से सप्लाई हो रहे हैं किसानों के आम

बालाघाट। जागत गांव हमार

किसानों का एफ.पी.ओ. परसवाड़ा किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड परसवाड़ा ने आम की मार्केटिंग कर आम उत्पादक किसानों को सीधे बाजार से जोड़ा है। जिले के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र के परसवाड़ा विकासखण्ड में कार्यरत एफ.पी.ओ. परसवाड़ा किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड द्वारा एवं प्रवर्तक संस्था सारडा के सहयोग से आम महोत्सव -6.0 -2023 का आयोजन दिनांक 08 से 14 जून तक किया जा रहा है। आम महोत्सव 6.0-2023 के दौरान परसवाडा के इस एफ.पी.ओ. के आम उत्पादक किसानों को मोबाइल वैन के माध्याम से सीधे बाजार उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है, ताकि किसानों द्वारा प्राकृतिक तरीके से उगाया एवं पकाया गया दशहरी, लंगडा और आम्रपाली आम का वाजिब दाम उन्हें मिल सके। इन आमों की किसान के

बाड़ी से ग्राहक तक सीधी पहुंच ने बिचौलियों की भूमिका खत्म कर दी है, जिससे जिले के आम उत्पादक किसानों को शुद्ध मुनाफा मिल रहा है। इन किसानों को प्रतिदिन 180 किलोग्राम राशी 14400 रुपए की आय हो रही है। नाबार्ड द्वारा बाड़ी प्रोजेक्ट के अंतर्गत सारडा संस्था के माध्यम से उद्यानिकी विभाग के सहयोग से एफ.पी.ओ. और राष्ट्रीय आजीविका मिशन के स्व-सहायता समूहों से संबंधित किसानों को पूर्व में आम के पौधे प्रदान किये गये थे, जिनसे अब आम का उत्पादन प्रारंभ हो गया है। खास बात यह है कि, एफ.पी.ओ. और स्व-सहायता समूहों के किसानों द्वारा इन आमों का उत्पाादन प्राकृतिक तरीके से किया जा रहा है तथा इन्हें बिना किसी रसायन के पकाया जाता है। अपने स्वाद, सुगंध, मिठास एवं अच्छी गुणवत्ता के कारण इन आमों को बहुत पसंद किया जा रहा है।

आम के शौकीनों में उत्साह

आम महोत्सव 6.0-2023 में परसवाडा एफ.पी.ओ. द्वारा आमों की सप्लाई मोबाइल वैन से की जा रही है। गर्मी और ग्राहक की सुविधा के लिए बालाघाट शहर के प्रमुख कलेक्ट्रेट कार्यालय से प्रारंभ की कालीपुतली चौक, आंबेडकर चौक, जय स्तंभ चौक और हनुमान चौक के अलावा वारासिवनी में मोबाइल वैन के जरिये आम की उक्त सभी वैरायटी को उपलब्ध कराया जा रहा है, जिसके कारण आम पसंद करने वाले लोगों का पहले दिन से ही उत्साह देखने को मिल रहा है।

पिछले वर्ष सात हजार से अधिक सैंपल का हुआ मृदा परीक्षण, पांच हजार से अधिक सैंपल में मिली थी कमी

बालाघाट की मिट्टी का स्वास्थ्य खराब, नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की कमी

रफी अहमद अंसारी, बालाघाट। जागत गांव हमार

मध्यप्रदेश के सबसे अधिक धान उत्पादित बालाघाट जिले में मिट्टी के स्वास्थ्य प्रशिक्षण में मिट्टी का स्वास्थ्य कमजोर होता जा रहा है। यहां प्रयोगशाला में मिट्टी के सैंपल लेकर प्रशिक्षण करने के बाद मिट्टी में नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटास की कमी मिल रही है। जिसे दूर करने के लिए विभागीय अमला नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की कमी को दूर करने के रासायनिक व जैविक उपाय भी किसानों को बताया जा रहा है। जिससे परीक्षण में मिलने वाले तत्वों की कमी को दूर किया जा सके और किसान बेहतर फसल का उत्पादन कर सके।

मृदा प्रयोगशाला के अमले ने जिले के समस्त विकासखंडों से पिछले वर्ष कोरोना के चलते मृदा के स्वास्थ्य प्रशिक्षण के लिए सैंपल कम लिए थे, लेकिन पिछले वर्ष जो सैंपल लिए गए थे उनमें ही ये स्थिति सामने निकलकर आई है। यहां पिछले वर्ष 7600 सैंपल लिए गए थे। जिसमें से 05 हजार सैंपल में नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की कमी मिली है। वहीं इस वर्ष भी प्रयोगशाला को 28 हजार 600 सैंपल लेने का लक्ष्य मिला है जो कि मार्च 2024 तक लिए जाएंगे। जहां इस वर्ष भी प्रयोगशाला में आए कुछ सैंपलों में यही स्थिति देखने को मिली है।

फास्फोरस,पोटाश व नाइट्रोजन में मध्यम स्थिति

वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी ने बताया कि मिट्टी के परीक्षण में पैरामीटर के आधार पर मिट्टी के पीएच मान की जांच की जाती है जिसमें अम्लीय 6.5 प्रतिशत से कम, सामान्य 6.5 से 8.2 तक, क्षारिय 8.2 से अधिक, ईसी सामान्य 01 से कम, मध्यम 01 से 03 तक, हानिकारक 03 से अधिक, जैविक कार्बन निम्न 0.5 से कम, मध्यम 0.5 से 0.75 तक,उच्च 0.75 से अधिक,उपलब्ध नाइट्रोजन निम्न 250 से कम, मध्यम 250 से 400, उच्च 400 से अधिक, उपलब्ध फास्फोरस निम्न में 10 से कम, मध्यम 10 से 20, उच्च 20 से अधिक व उपलब्ध पोटेशियम में निम्न 250 से कम, मध्यम 250 से 400, उच्च 400 से अधिक रहता है। लेकिन बालाघाट में जहां फास्फोरस,पोटाश व नाइट्रोजन में मध्यम स्थिति उपलब्ध हो पा रही है। अधिकारी के बताए अनुसार बालाघाट जिले में खरीफ के सीजन में धान की खेती बहुतायत में होती है। वहीं वर्षा के दिनों में खेतों में अधिक जलभराव होने के चलते ये तत्व बह जाते है या फिर पानी में घुल कर उड़ जाते है। जिससे बालाघाट की मिट्टी की जांच में नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की कमी देखने को मिलते है।

जिले में मिट्टी प्रशिक्षण प्रयोगशाला में समस्त विकासखंडों से मिट्टी के सैंपल लाकर प्रशिक्षण किया जाता है। एक सैंपल के प्रशिक्षण में कम से कम दो दिन लग जाते है और यह कार्य सालभर किया जाता है। मिट्टी प्रशिक्षण में नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश में मध्यम स्तर पर कमी मिल रही है। जिसे दूर करने के किसानों को समझाइश व उपाय बताए जा रहे है।
हिना शिववंशी, वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी, मृदा प्रयोगशाला।

शिवपुरी के कृषकों को कृषि वानिकी राजदूत (एग्रोफॉरेस्ट्री एम्बेसेडर) का मिला सम्मान

शिवपुरी। भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी द्वारा 5 जून 2023 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कृषि वानिकी राजदूत (एग्रोफॉरेस्ट्री एम्बेसेडर) के सम्मान से शिवपुरी जिले कृषकों का भी चयन किया गया। खेती के साथ-साथ वानिकी के विभिन्न रूपों में पेड़-पौधों को बढ़ावा देने तथा जनसामान्य के साथ-साथ कृषकों में पर्यावरण हितैषी विधाओं को स्वंय अपनाते हुए पर्यावरण के लिए जीवनशैली को प्रोत्साहित करते हुये मनुष्य, भूमि एवं पर्यावरण स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए निरंतर जागरूकता भी कर रहे हैं। भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी में बतौर मुख्य अतिथि शामलाल गोयल, सेवानिवृत वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी, मुख्य अतिथि रहे। डॉ. जोगेन्द्र सिंह सेवानिवृत, अतिरिक्त आयुक्त कृषि, भारत सरकार, विजय कुमार शर्मा के साथ ग्राम पाठखेडा वि.ख. शिवपुरी के युवा कृषक धनीराम धाकड़ को भी कृषि वानिकी राजदूत (एग्रोफॉरेस्ट्री एम्बेसेडर) के सम्मान से विश्व पर्यावरण के अवसर पर सम्मानित किया गया।

कृषि वानिकी की विभिन्न पद्धतियों के द्वारा भूमि का उचित संयोजन

केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. ए. अरूणाचलम एवं प्रधान वैज्ञानिक सह प्रभारी ऐटिक डॉ. आर. पी. द्विवेदी के साथ वैज्ञानिक दल ने कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवपुरी के समन्वय में जिले में भ्रमण करते हुए कृषि वानिकी के संभावनाओं एवं प्रसार के लिए चयन किया गया। भारत सरकार के संस्थान के साथ समन्वय करते हुये रा.वि.सि.कृ.वि.वि. ग्वालियर के कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवपुरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एम. के. भार्गव ने इस बारे में जानकारी देते हुये बतलाया की पर्यावरण हितेषी कृषि के लिए पेड़-पौधों के साथ फल वृक्षों की उन्नत प्रजाति के विभिन्न मॉडलस् के रूप में जागरूकता की जा रही है। जिसमें एग्रोटूरिज्म, ग्रामीणपर्यटन, नक्षत्रवाटिका, स्टार प्लानटेशन, ब्लाक प्लानटेशन एवं कृषि वानिकी की विभिन्न पद्धतियों के द्वारा भूमि का उचित संयोजन करते हुये लाभकारी एवं अधिक आय के प्राप्ति भी की जा सकती है और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी होता रहता है।

उज्जैन के किसानों ने देखा केवीके शिवपुरी की समन्वित कृषि प्रणाली

शिवपुरी। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केन्द्र शिवपुरी पर उज्जैन जिले के पूर्व अध्यक्ष-जिला पंचायत ठा. कान्हसिंह राठौर, डॉ ईश्वर सिंह सिसौदिया प्रगतिशील कृषक एवं डॉ. दिवाकर सिंह तोमर वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा भ्रमण किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियों का अवलोकन करते हुए विभिन्न इकाईयों - प्राकृतिक खेती, वर्षभर हारा चारा उत्पादन मॉडल एवं समन्वित कृषि प्रणाली में कड़कनाथ मुर्गीपालन सह मछलीपालन तथा वर्षा जल (रूफवाटर) संचयन के मॉडल का अवलोकन करते हुए इस पद्धति से सीमांत और कम भूमि क्षेत्र वाले किसानों के लिए निरंतर लाभ का उपयोगी मॉडल बतलाया तथा सराहना करते हुए जिले के कृषि परिदृष्य में सोयाबीन, मूंगफली एवं टमाटर जैसी फसलों के बारे में जाना तथा जानकारी साझा करते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा जिले के परिप्रेक्ष्य में किये जा रहे कार्यों की सराहना भी की गई। उक्त दल का केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एम. के. भार्गव द्वारा भ्रमण कराते हुए तकनीकियों के आदान-प्रदान तथा समन्वय से

किसानों के लिए उन्नत बीजों की प्रजातियों एवं बीजों के बारे में भी परिचर्चा की गई। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र के अन्य वैज्ञानिक डॉ. जे.सी.गुप्ता, डॉ पुष्पेन्द्र सिंह एवं डॉ ए. एल. बसेड़िया, योगेश चन्द्र रिखारी, डॉ. एन.के. कुशवाहा, विजय प्रताप सिंह एवं सतेन्द्र गुप्ता भी उपस्थित रहे।

धान की रोपाई के लिए कृषि यंत्र पर सरकारी अनुदान

पैडी ट्रांसप्लांटर मप्र सरकार दे रही सब्सिडी, आवेदन करें

भोपाल। जागत गांव हमार

खरीफ सीजन में किसान धान की बुआई आसानी से कर सकें इसके लिए पैडी (राइस) ट्रांसप्लांटर पर अनुदान उपलब्ध कराने के लिए मध्य प्रदेश कृषि विभाग ने आवेदन आमंत्रित किए हैं। कृषि अभियांत्रिकी विभाग द्वारा पैडी (राइस) ट्रांसप्लांटर को माँग के अनुसार श्रेणी में रखा है अर्थात् अभी इसके लिए निर्धारित लक्ष्य जारी नहीं किए गए हैं। किसानों के द्वारा आवेदन के अनुसार ही किसानों को यह कृषि यंत्र अनुदान पर दिए जाएँगे। कृषि अभियांत्रिकी संचालनालय द्वारा पैडी (राइस) ट्रांसप्लांटर के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। इच्छुक किसान योजना का लाभ लेने के लिए आवेदन कर सकते हैं।''माँग अनुसार श्रेणी'' के यंत्रों हेतु भी आवेदन सामान्य प्रक्रिया अनुसार ही किये जाएँगे। इन यंत्रों हेतु पृथक से लक्ष्य जारी नहीं किए जाएँगे और ना ही लॉटरी निकाली जाएगी। बल्कि उपलब्ध बजट के आधार पर संचालनालय स्तर से आवेदनों को अनुमोदित किया जायेगा। अनुमोदित होने पर कृषक का आवेदन पोर्टल पर चयनित कृषकों की सूची में प्रदर्शित कर दी जाएगी। अनुमोदन की सूचना कृषक को एस.एम.एस. के माध्यम से दी जायेगी।

कितना अनुदान- मध्यप्रदेश में किसानों को अलग-अलग योजनाओं के तहत कृषि यंत्रों पर किसान वर्ग एवं श्रेणी के अनुसार अलग-अलग सब्सिडी दिए जाने का प्रावधान है, जो 40 से 50 प्रतिशत तक है। जो किसान पैडी (राइस) ट्रांसप्लांटर कृषि यंत्र लेना चाहते हैं वह किसान पोर्टल पर उपलब्ध सब्सिडी कैलकुलेटर पर कृषि यंत्र की लागत के अनुसार उनको मिलने वाली सब्सिडी की जानकारी देख सकते हैं।

देना होगा 5 हजार रुपए का डिमांड ड्राफ्ट (डीडी)

कृषि यंत्रों के आवेदन में ऐसा देखा गया है कि किसान का सूची में नाम आ जाने के बावजूद भी कृषि यंत्र की खरीदी नहीं करते हैं । इसको देखते हुए किसान से 5000 रूपये का डिमांड ड्राफ्ट जिले के सहायक कृषि यंत्री के नाम से बनवाना होगा। आवेदन प्रस्तुत करते समय आवेदकों को उपयुक्त राशि के बैंक ड्राफ्ट जो उनके जिले के सहायक कृषि यंत्री के नाम से बना कर स्कैन करके पोर्टल पर अपलोड करना होगा।

आवेदन कहाँ करें

पैडी ट्रांसप्लांटर कृषि यंत्र के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू की जा चुकी है। इच्छुक किसान भाई ऑनलाइन द्व-कृषि यंत्र अनुदान पोर्टल पर कर सकते हैं परन्तु सभी किसान भाइयों को यह बात ध्यान में रखना होगा की आवेदन के समय उनके पंजीकृत मोबाइल नम्बर पर ह्रञ्क्वन टाइम पासवर्ड प्राप्त होगा7 इसलिए किसान अपना मोबाइल अपने पास रखें 7 किसान द्धह्लह्लश्चह्य-//स्रड्डह्न.द्मश्चस्रड्डद्ग.श्वह्द/ पर जाकर आवेदन कर सकते हैं।

धान की रोपाई से लाभ

जहाँ पैडी ट्रांसप्लांटर से धान रोपाई बहुत ही आसान है, मशीन द्वारा 1 एकड़ की धान की रोपाई मात्र 2 से 3 घंटे में पूरी हो जाती है एवं इसमें अपेक्षाकृत लागत भी कम आती है। पैडी ट्रांसप्लांटर मशीन से मैट टाइप नर्सरी तैयार करने से उत्पादन में भी 10 से 12 प्रतिशत बढ़ोतरी भी होती है। पैडी ट्रांसप्लान्टर से रोपाई करने में जहाँ कम श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती है वही इससे बीज की बचत एवं निंदाई, गुड़ाई एवं कटाई आदि कार्य भी आसानी से किये जा सकते हैं।

जिले में ज्वार-बाजरा की खेती की असीम संभावनाएं: डॉ वाय पी सिंह

भिंड/लहार। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केंद्र पर आज वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें केंद्र की विगत 6 माह की प्रगति तथा आगामी 6 माह की कार्य योजना का प्रस्तुतीकरण केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ एस पी सिंह द्वारा किया गया। बैठक का आयोजन ऑनलाइन तथा ऑफलाइन, हाइब्रिड मोड में किया गया। बैठक में प्रमुख रूप से केंद्र और जिले के सभी सहयोगी विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक-वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

कार्य योजना प्रस्तुतीकरण के बाद बैठक को संबोधित करते हुए राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक विस्तार सेवाएं डॉ वाय पी सिंह ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि विभिन्न कार्यक्रमों में फसल प्रजातियों का चयन जिले की जलवायु अनुकूल परिस्थितियों को देखते हुए किया जाए। निकरा परियोजना के कार्यों को जलवायु परिस्थितियों के अनुरूप संचालित किया जाए। उन्होंने कहा कि जिले में मोटे अनाज के रूप में ज्वार व बाजरा की खेती की असीम संभावनाएं विद्यमान है। अतः इस खरीफ मौसम में किसानों को ज्वार-बाजरा खेती के लिए प्रोत्साहित करने के साथ ही केंद्र के फार्म पर भी एक हेक्टर क्षेत्र में ज्वार-बाजरा की फसल लगाई जाए।

कृषि विज्ञान केंद्र दतिया के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ आर के एस तोमर ने केंद्र के प्रदर्शनों में 10 साल के भीतर की प्रजाति लेने की बात कही। उन्होंने कहा कि छोटे व मझोले किसानों को खेती के साथ मुर्गी पालन बकरी पालन से जोड़ने की जरूरत है जिससे उनकी आमदनी में इजाफा हो सके।

केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ एस पी सिंह ने बताया कि कृषि विज्ञान केंद्र की आज खरीफ 2023 की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें अक्टूबर 2022 से मार्च 23 तक किए गए कार्यों का प्रगति प्रतिवेदन तथा अप्रैल से सितंबर 2023 तक आगामी 6 माह में किए जाने वाले कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है। डॉ सिंह बताया कि आज की बैठक में जो सुझाव विभिन्न विभागों, अधिकारियों, वैज्ञानिकों व किसानों से प्राप्त हुए हैं। उन्हें आगामी कार्य योजना में शामिल किया जाएगा।

पशुओं में संक्रामक गर्भपातः ब्रूसेल्लोसिस

डॉ. शिल्पा गजभिये

पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विज्ञान महाविद्यालय रीवा, मप्र

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विज्ञान विवि

समस्त पालतु पशु ब्रूसेल्लोसिस रोग के प्रति संवेदनशील होते हैं। गाय, भैंस, भेड़, बकरी एवं शूकरों में इस रोग का प्रकोप अत्यधिक होता है। ब्रूसेल्लोसिस रोग पशुओं से मनुष्य में फैलता है। अतः इस रोग का जन स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत अधिक महत्व है। मनुष्य में यह रोग अंडूलेंट ज्वर, माल्टा ज्वर तथा बैंग्स ज्वर के नाम से जाना जाता है। इस रोग से गौवंश में ग्याभिन पशु अधिकांशतः 6- 9 माह एवं भेड़-बकरी में 3-5 माह में गर्भपात हो जाता है।

कारणः यह रोग ब्रूसेल्ला प्रजाति के जीवाणु ब्रूसेल्ला अबोर्टस, ब्रूसेल्ला मेलिटेनसिस, ब्रूसेल्ला सुइस, ब्रूसेल्ला ओविस आदि के संक्रमण से होता है।

रोग का फैलावः संक्रमित चारा, दाना, पानी एवं दूध से। बच्चेदानी एवं योनी के स्त्राव के द्वारा। रोगी पशुओं के मल-मूत्र से। संक्रमित नर द्वारा प्राकृतिक परिसेवा द्वारा। त्वचा के घावों, नेत्र श्लेष्मा, थन द्वारा भी रोग का संचरण होता है।

पशुओं में रोग के लक्षणः ब्रूसेल्लोसिस में संक्रमण के पश्चात अधिकांश मादा पशुओं में गर्भपात होता है। तेज बुखार, सुस्ती, बैचेनी व दूध में कमी। गर्भपात के पश्चात जेर का समय पर नहीं गिरने के कारण बच्चेदानी में मवाद पड़ना। पशु का देर से ग्याभिन होना। नर पशुओं में बुखार, जोड़ों का रोग तथा वृषण शोथ आदि मुख्य लक्षण पाये जाते हैं।

मनुष्यों में रोग के लक्षणः सर्दी लगकर बुखार आना एवं बुकार में उतार-चढ़ाव। जोड़ों में दर्द रहना। शारीरिक दुर्बलता। लगातार पेट में दर्द रहना। सोते समय अधिक परसीना आना।

रोग के उपायः काटन स्ट्रेन-19 नामक टीके का उपयोग रोग के बचाव हेतु किया जाता है। पशुओं में यह टीका छः से बारह माह की आयु में लगाया जा सकता है। प्रजनन कार्य के लिए प्रयोग होने वाले सांडों में यह टीका नहीं लगाना चाहिए। देर से ग्याभिन होने वाले पशु की चिकित्सक को दिखाना चाहिये। गर्भपात के समय हुए स्राावों, मृत बड़ों व जैर को विशेष सावधानी के साथ गड्ढा खोदकर गड़बाना चाहिये। रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से पृथक कर देना चाहिए। जेर आदि समय पर नहीं गिरने पर बीमार पशु को चिकित्सक को दिखाना चाहिये।

वृक्षारोपण करने वाले किसानों का किया जाएगा दुर्घटना बीमा

मध्य प्रदेश के 22 हजार किसान लगाएंगे 1 करोड़ 20 लाख पौधे

भोपाल। जागत गांव हमार

दुनिया में ग्लोबल वॉर्मिंग एक चिंता का विषय बनी हुई है, जलवायु परिवर्तन का असर अब खेती पर भी दिखने लगा है। ऐसे में सरकारों के द्वारा इस प्रभाव को कम करने के लिए वृहद् वृक्षारोपण कायक्रम चलाए जा रहे हैं। इस कड़ी में मध्य प्रदेश सरकार ने विश्व पर्यावरण दिवस पर 1 करोड़ 20 लाख पौधे लगाने का अभियान आरंभ किया है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने निवास कार्यालय से विश्व पर्यावरण दिवस पर नर्मदापुरम जिले के सिवनीमालवा के आवली घाट में रुपई एग्रो फाउंडेशन प्राइवेट लिमिटेड के विशाल कृषक एवं नर्मदा संरक्षण संकल्प अभियान का वर्चुअल शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। प्रकृति के साथ खिलवाड़ घातक है। हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए धरती को जीने लायक बनाए रखने के लिए

हम सबको व्यक्तिगत स्तर पर पर्यावरण-संरक्षण की दिशा में कार्य करना होगा। अपने जन्म-दिन, वैवाहिक वर्षगाँठ, परिजन की स्मृति तथा जीवन की अन्य उपलब्धियों पर पौधे लगा कर और उनकी देख-रेख की जिम्मेदारी लेकर प्रकृति को हरा-भरा बनाए रखने में अपना योगदान दे सकते हैं। किसान भाई धरती पुत्र हैं, धरती को बचाने की सबसे अधिक जिम्मेदारी उन पर है।

मुकाती 'पेड़ बाबा' की उपाधि दी

मुख्यमंत्री ने रूपई एग्री फॉरेस्ट के संचालक श्री गौरीशंकर मुकाती की तुम मुझे मेढ़ दो-मैं तुम्हें पेड़ दूँगा की पहल की सराहना कर उन्हें 'पेड़ बाबा' की उपाधि दी। उन्होंने कहा कि हमें प्रकृति के शोषण नहीं दोहन का दृष्टिकोण अपनाना होगा। उल्लेखनीय है कि माखन नगर, इटारसी, डोलरिया, नर्मदापुरम, सीहोर, रेहटी और भैरूंदा के 22 हजार किसानों द्वारा अपने खेतों में अभियान चला कर पौध-रोपण किया जाएगा।

किसानों का किया जाएगा दुर्घटना बीमा

इस अवसर पर कृषि मंत्री कमल पटेल ने पौधरोपण के इस अभियान से जुड़े प्रेरक किसानों को जैविक मूंग वितरित कर सम्मानित किया और दुर्घटना बीमा भी प्रदान किया। मंत्री पटेल ने पौध-रोपण कर सभी को पर्यावरण-संरक्षण के लिए प्रेरित किया। श्री मुकाती ने बताया कि वर्ष 2030 तक 50 करोड़ पौधे लगाने का संकल्प है। इस कार्य में जुड़े सभी किसानों को दुर्घटना बीमा भी प्रदान किया जाएगा।

किसानों की आजीविका में सुधार होगा और फसल की उपज भी बढ़ेगी

आईसीएआर और अमेजन किसान के साथ हुआ एमओयू किसानों को तकनीकी ज्ञान के साथ मिलेंगे कई लाभ

नई दिल्ली। जागत गांव हमार

देश में किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। इस कड़ी में 9 जून के दिन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, (आईसीएआर) नई दिल्ली, ने अमेजन किसान के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। ताकि, अधिक उपज और आय के लिए, विभिन्न फसलों की वैज्ञानिक खेती पर किसानों का मार्गदर्शन करने, दोनों संगठनों में तालमेल बिठाकर उनकी शक्ति का संयोजन किया जा सके।

आईसीएआर, अमेजन के नेटवर्क के माध्यम से किसानों को तकनीकी सहायता प्रदान करेगा। इसके परिणामस्वरूप किसानों की आजीविका में सुधार होगा और फसल की उपज भी बढ़ेगी। 'अमेजन किसान कार्यक्रम' से किसानों के साथ साझेदारी का यह समझौता ज्ञापन, उपभोक्ताओं के लिए उच्च गुणवत्ता वाली ताजी उपज तक पहुँच, अमेजन फ्रेश के द्वारा भी, सुनिश्चित करने में मदद करेगा।

किसानों के बीच बढ़ाया जाएगा तकनीकी आधार

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि विज्ञान केंद्र और अमेजन के बीच पुणे की एक पायलट परियोजना के परिणामों ने व्यापक शोध के माध्यम से विकसित, उचित कृषि पद्धतियों का विस्तार करने के लिए सहयोग को और आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। कृषि विज्ञान केंद्र, प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण और दक्षता निर्माण कार्यक्रमों के माध्यम से तकनीकी आधार को बढ़ाकर किसानों के एक व्यापक समूह को मजबूत करेगा। इससे किसानों को उन्नत खेती करने में सहयोग मिलेगा।

बेहतर आय के लिए माध्यमिक कृषि पर दिया जाएगा जोरः डॉक्टर हिमांशु पाठक

डॉक्टर हिमांशु पाठक, सचिव, डीएआरई, महानिदेशक, आईसीएआर, ने इस अवसर पर किसानों के लिए बेहतर आय के लिए माध्यमिक कृषि पर ज़ोर दिया। आगे उन्होंने कृषि और मौसम आधारित फसल योजनाओं में महत्वपूर्ण इनपुट के महत्व और भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने उल्लेख किया कि आईसीएआर नए ज्ञान, दक्षता उन्नयन और तकनीक के हस्तांतरण के लिए अमेजन के साथ सहयोग करेगा।

कृषि लाभ को बढ़ाने के उददेश्य से एक साथ करेंगे काम

अमेजन, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और कृषि विज्ञान केंद्रों में अन्य किसान से जुड़े कार्यक्रम पर एक साथ प्रदर्शन, परीक्षण और दक्षता उन्नयन आदि माध्यमों से खेती के तरीकों और कृषि लाभ को बढ़ाने के उद्देश्य से काम करेंगे। इसके अलावा अमेजन अपने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से किसानों को उनकी उपज के विपणन में प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करेगा ताकि, उपभोक्ताओं के साथ उनका सीधा जुड़ाव हो सके।

किसानों को उपभोक्ता से जोड़ने नई दिल्ली में पूसा एग्री हाट

जैविक या प्राकृतिक कृषि हमारी सनातन परंपराः पाठक

नई दिल्ली। जागत गांव हमार

किसानों के उत्पादों को सीधे उपभोक्ता को उपलब्ध कराने के प्रयास में दिल्ली में एग्री हाट का निर्माण किया गया है जिसका उद्देश्य शुद्ध स्वदेशी कृषि उत्पादों को जन-जन तक पहुंचाना है। पूसा एग्री हाट में आर्यावर्त स्वदेशी उत्पाद की दुकान पूसा के उद्घाटन समारोह में महानिदेशक डा. हिमांशु पाठक मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर डॉ. पाठक ने कहा कि जैविक या प्राकृतिक कृषि हमारी सनातन परंपरा रही है, जिसमें हम जल, जीवन, जलवायु, जंगल, जानवर,जमीन, जनता और जनादेश, सब को साथ लेकर चलते हैं। डॉ. पाठक ने कहा कि पूसा संस्थान उनकी आत्मा है। उन्होंने आश्वासन दिया कि पूसा एग्री हाट को प्रोत्साहित करने के लिए हर संभव सहयोग देते रहेंगे। डॉ० सी० विश्वनाथन, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान), ने पूसा हाट की उपयोगिता को बताते हुए कहा कि अब दिल्लीवासियों को शुद्ध एवं सात्विक खाद्य पदार्थ सीधे किसानों द्वारा उपलब्ध होंगे। संस्थान के संयुक्त निदेशक (प्रसार) डॉ. आर. एन. पडारिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें सभी नागरिकों के पोषण एवं स्वास्थ्य का ख्याल रखना होगा और इसके लिए किसानों के बीच प्राकृतिक कृषि का प्रचार-प्रसार करना होगा।

किसान-व्यापारी दोनों सत्य की राह पर चलेंगे तो व्यापार भी सात्विक बन जाएगा

उद्घाटन समारोह के मुख्य वक्ता, अथर्ववेद के प्रकांड पंडित, आचार्य हनुमत प्रसाद उपाध्याय ने कहा, देश का किसान यदि वेद के अनुसार सत्याचरण करेगा तो कभी भी अपनी भूमि में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशियों का प्रयोग नहीं करेगा। इनके अनुसार कृषि कार्य वैश्य वर्ण में आता है जिसके अंतर्गत अन्न उगाने वाला और उसका व्यापार करने वाला, दोनों आते हैं अर्थात किसान और व्यापारी दोनों यदि सत्य की राह पर चलेंगे तो व्यापार भी सात्विक बन जाएगा। समारोह में प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक, पद्मश्री डा. वी.पी. सिंह ने संस्थान से जुड़ी अपनी यादों को साझा किया।

नाबार्ड की वाड़ी परियोजना से आदिवासी परिवारों में तरक्की

भोपाल। नाबार्ड द्वारा पांच दिवसीय आम महोत्सव 6.0 की शुरुआत की गई। यह महोत्सव भोपाल के बिट्टन मार्केट स्थित नाबार्ड के क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित किया गया है। इस महोत्सव का शुभारंभ मुख्य अतिथि हेमंत कुमार सोनी प्रभारी-महाप्रबंधक, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भारत सरकार की वित्तीय समावेशन की नीतियों से किसानों को लाभ पहुंच रहा है।

इस मौके पर नाबार्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल के मुख्य महाप्रबंधक सुनील कुमार ने कहा कि इस आम महोत्सव का उद्देश्य किसानों को मार्केटिंग का प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराना है। उन्होंने कहा कि नाबार्ड ने किसानों के हितों के लिए वाड़ी परियोजना की स्थापना की है। इससे आदिवासियों का सशक्तीकरण होगा। पी.एस. तिवारी, प्रबंध निदेशक अपेक्स बैंक ने नाबार्ड के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि वाड़ी परियोजना पर्यावरण के लिए भी महत्वपूर्ण है।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादकः अजय कुमार द्विवेदी, **संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेलः- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)